

DR. JITENDRA HARIPAL

Dr. Jitendra Haripal is a famous folk singer of Odisha, who popularised and introduced the Sambalpuri folk songs across the world through his landmark creation of "RangabatiRcuigabati" song. He is known for his enchanting folksy voice and unparalleled contribution to Sambalpuri/Koshali folk and tribal culture of his region. Shri Haripal is widely accepted as a good human being for his simplicity, honesty and intense love for the rich culture of Ganda community, he belongs to.

2. Dr. Haripal, born on September 13, 1947 in a poor Dalit family housed in Stationpara of Khetrajpur, Sambalpur of Odisha, was socialized in the lap of his late mother Hansabati Devi and father Mandhata Haripal. A drop-out of Town High School, Sambalpur, Dr. Haripal could not get his formal education for poverty. But from early childhood being inspired by his father, Dr. Haripal started practising music everyday at early morning sitting on the lap of his singer father to master over the traditional song like 'JayasareeJagabandau..."and alike. He was never imparted any regular formal training on music. But being imputed through encouragements by some well-wishers and pivotal gurus like Late Lakhanlal Rajput, Fakir Mohan Pattnaik, Arun Seth, Narayan Senapati, and Prabhudatta Pradhan, he successfully displayed his talent and got accredited as 'B Grade artiste in All India Radio, Sambalpur in the year 1970 and again upgraded to 'B' High grade later on. His first song recorded and broadcast was in Sambalpuri, "BkaLuPaidaPatarafie..." followed by "Hai Kustan Hai Kustan...", "Mandaf Bajila...", "Lenjera ghanti defana...."and many more such songs which made him popular.

3. The famous folk based Sambalpuri song, 'Rang abatee Rangabatee...", took Dr. Haripal and his co-singer Krishna Patel to the zenith of popularity, which was recorded for All India Radio,Sambalpur in 1976-77 for Surmaaka special programme and re-recorded (Disc) later on in Indian Record Company (INERCO), Kolkata around 1979-80. It became an all time hit song like no other in Indian music history, a number in every one's lips. Though from Odisha, "Ratu3abatee..." captured huge areas across the nation. There was a time in the 1980s when no self-respecting truck driver hit the road without the song in cabin. It is reported that Rangabatee song is broadcast in various Radio stations of world including BBC, London and Russia. Now the song has cracked the entire Film Industry of India in different form and flavour. Thousands of version of the song are recreated by different artistes made available in internet. The song earned fame and recognition for Odisha in Republic Day National Parade. The Government of Odisha is organising a grand festival each year in the name "Rangabati Litsav" for the memory of the popularity of the song and also declared the name of the native village of the lyricist Sri Mitrabahanu Gauntia as "Rangabati Bifung". The song becomes identity for folk music of Odisha. During the entire career Dr. Haripal has recorded about 1000 songs in total for All India Radio and private audio companies. He dedicates a Hindi Patriotic album entitled 'Aman' (The Peace) made in his own voice and got released by Sri Naveen Patnaik, Hon'ble Chief Minister of Odisha on 3r^{d} Apri1,2007. He staged in Dubai with Sambalpuri folk songs and dance in 2016.

4. An exponent of folk art, Dr. Haripal pays equal honour to other music culture of world. He has proved it by singing in other musical forms and languages like Sadri, Bhojpuri, Chattishgarhi and Baul apart from Sambalpuri/Koshali in various stages. For Dr. Haripal music has been a pride not profession, an art not employment. He respects himself as an artiste and denies to be called as performer. He has even today an utter urge to learn folk songs mostly of dying culture and from the talented indigenous folk artistes of west Odisha. A sentimental artiste Dr. Haripal started a movement to provide justice to thousands of village folk artistes by urging before Government for Constitutional recognition with special status of^{li}ADIKALA GANDABAJA" to the rich Dalit culture of Odisha.

5. For his unparallel contribution to folk music, Dr. Haripal has been honoured in outnumber by different Government and Non-government organisations. The Odisha Sangeet Natak Akademi honoured him in 2001 and he was conferred with Degree of Doctor of Literature (Honoris Causa) by Utkal University of Culture, Bhubaneswar on 10t^{h} of April, 2015 in recognition of his outstanding achievement in the field of Creative Folk Art and Music.



डॉ. जितेन्द्र हरिपाल

डॉ. जितेन्द्र हरिपाल उड़ीसा के प्रसिद्ध लोक गायक हैं, जिन्होंने "रंगाबाती रंगाबाती" गीत की रचना कर विश्वभर में सम्बलपुरी लोकगीत का परिचय दिया एवं इसे लोकप्रिय बनाया। आप अपने सुमधुर आकर्षक कंठ ध्वनि एवं संबलपुरी/कोसली लोकगीत तथा अपने क्षेत्र की जनजातीय संस्कृति के प्रति अपने अप्रतिम योगदान के लिए सविख्यात हैं। आप एक उत्तम व्यक्तित्व हैं तथा अपनी सरलता, ईमानदारी तथा अपने समुदाय, गंडा समुदाय की समृद्ध संस्कृति के प्रति अपार प्रेम के लिए सुप्रसिद्ध हैं।

2. आपका जन्म उड़ीसा के संबलपुर के खेतराजपुर के स्टेशनपारा में एक गरीब दलित परिवार में 13 सितंबर, 1947 को हुआ था। आपको माता हंसवती देवी (अब स्वर्गवासी) तथा पिता मांधाता हरिपाल के गोद में अपार स्नेह मिला। आप गरीबी के कारण टॉन हाईस्कूल, संबलपुर से अपनी औपचारिक शिक्षा पूरी न कर सके। परंतु आपने अपने गायक पिता की गोद से ही "जयश्री जगबंधु" जैसे पारंपरिक गीतों को गाकर प्रतिदिन प्रात: काल में संगीत साधना की शुरूआत बचपन से ही कर दी थी। आपको कभी भी संगीत की नियमित औपचारिक शिक्षा प्राप्त नहीं हुई। परंतु, कुछ शुभचिंतकों एवं स्वर्गीय लाखनलाल राजपूत, फकीर मोहन पटनायक, अरूण सेठ, नारायण सेनापति एवं प्रभुदत्ता प्रधान जैसे आदरणीय गुरूओं के प्रोत्साहन से आपने अपनी प्रतिभा का सफलतापूर्वक प्रदर्शन किया एवं वर्ष 1970 में आकाशवाणी संबलपुर में 'बी' ग्रेड कलाकार के रूप में प्रतिष्ठित किये गए एवं बाद में पुन: 'बी' उच्च ग्रेड को प्राप्त करने में सफल रहे। आपका पहला गीत संबलपुरी में "भालू पलाला पाताराके...." रिकॉर्ड किया गया एवं इसे प्रसारित किया गया। इसके बाद "है कुस्तन है कुस्तन.....", "मंडल बाजीला....", "लेनजेरा घंटी देलाना...." एवं और अन्य ऐसे गीतों ने आपको लोकप्रिय बना दिया।

3. लोकगीत आधारित आपकी संबलपुरी गीत "रंगाबाती रंगाबाती....." ने आपको एवं आपके सह गायक कृष्णा पटेल को लोकप्रियता के शिखर पर पहुंचा दिया जिसे वर्ष 1976-77 में 'सुरमालिका' विशेष कार्यक्रम के लिए आकाशवाणी, संबलपुर के लिए रिकॉर्ड किया गया था तथा बाद में इंडियन रिकॉर्ड कंपनी (आईएनईआरसीओ), कोलकाता में 1979-80 के दौरान इसकी पुन: रिकॉर्डिंग की गई। इस गीत को भारतीय संगीत के इतिहास में अभूतपूर्व सफलता मिली तथा यह गीत इतना लोकप्रिय हुआ कि जैसे यह सभी के अधरों पर बस गया हो । यद्यपि यह गीत उड़ीसा का है परंतु "रंगाबाती...." ने देश के एक विस्तृत क्षेत्र में लोकप्रियता हासिल की। 1980 के दशक में एक ऐसा समय था कि सभी आत्मसम्मान वाले ट्रक चालकों के केबिन में यह गीत चलता रहता था। इस आशय की रिपोर्ट मिलती है कि रंगाबाती गीत बीबीसी लंदन एवं रूस सहित विश्व के विभिन्न रेडियो स्टेशनों से प्रसारित किये जा चुके हैं। यह गीत भारत के संपूर्ण फिल्म उद्योग में विभिन्न रूपों एवं रूचियों में समाहित हो चुका है। इस गीत के हजारों वर्ज़न विभिन्न कलाकारों द्वारा बनाए गए है एवं इंटरनेट पर उपलब्ध हैं। उड़ीसा सरकार इस गीत की लोकप्रियता की स्मृति में प्रत्येक वर्ष "रंगाबाती उत्सव" का भव्य आयोजन करती है एवं इसमें इस गीत के रचयिता श्री मित्र भानु गोंटिया के पैतृक गांव को "रंगाबाती बिलंग" नाम से विभूषित किया है। यह गीत उड़ीसा के लोक संगीत का परिचय बन गया है। अपने संपूर्ण कैरिअर में आपने आकाशवाणी एवं निजी औडियो कंपनियों के लिए लगभग 1000 से अधिक गीत रिकॉर्ड कराए हैं। आपने "अमन" (द पीस) नामक हिन्दी राष्ट्र भक्ति गीत एलबम अपनी आवाज में बनाई है तथा श्री नवीन पटनायक, माननीय मुख्यमंत्री, उड़ीसा ने 03 अप्रैल, 2007 को इसका विमोचन किया। आपने वर्ष 2016 में दुबई में संबलपुरी लोकगीत एवं नृत्य कार्यक्रम में प्रदर्शन किया है।

4. लोकसंगीत कला के प्रणेता के रूप में आप विश्व की अन्य संगीत संस्कृतियों को समान आदर देते हैं। आपने अन्य संगीत विधाओं एवं भाषाओं यथा-सदरी, भोजपुरी, छत्तीसगढ़ी तथा बाल एवं इसके साथ-साथ विभिन्न मंचों पर संबलपुरी/कोसली की प्रस्तुतियों के माध्यम से संगीत के प्रति अपने इस प्रेम को सिद्ध किया है। आपके लिये संगीत पेशा ही नहीं अपितु गर्व का, रोजगार का नहीं अपितु कला का विषय है। आप कलाकार कहलाना पंसद करते हैं न कि कला प्रस्तोता। आपको आज भी अधिकांश मृतप्राय: संस्कृति के लोकसंगीतों को तथा पश्चिमी उड़ीसा के देशज प्रतिभावान लोक कलाकारों से सीखने की उत्कृष्ट इच्छा रहती है। आप अत्यंत भावुक कलाकार हैं। आपने उड़ीसा की समृद्ध दलित संस्कृति के हजारों ग्रामीण लोक कलाकारों को न्याय दिलाने हेतु उन्हें "आदि कला गंदबाजा" का विशेष दर्जा देते हुए उनकी प्रतिभा को सांविधिक पहचान दिलाने हेतु उड़ीसा सरकार से आग्रह करने के लिए एक आंदोलन प्रारंभ किया।

5. लोक संगीत के प्रति आपके अप्रतिम योगदान के लिए आपको विभिन्न सरकारी एवं गैर-सरकारी संगठनों से सम्मानित किया जा चुका है। उड़ीसा संगीत नाटक अकादमी ने वर्ष 2001 में आपको सम्मानित किया तथा उत्कल यूनिवर्सिटी ऑफ कल्चर, भुवनेश्वर द्वारा सृजनात्मक लोक कला एवं संस्कृति के क्षेत्र में आपकी उत्कृष्टतम उपलब्धियों को मान्यता देते हुए आपको 10 अप्रैल, 2015 में डॉक्टर ऑफ लिटरेचर की उपाधि (मानद) से सम्मानित किया गया है।